पानी केरा बुदबुदा और नारी अस्तित्व

शोधार्थी:-सबज़ार अहमद बट्टू

न्युयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर सुषम बेदी ने लगभग सभी साहित्यिक विधाओं पर लेखनी चलाई है. उनके अधिकाँश उपन्यास अमेरिका में रहने वाले भारतीय पात्रों पर आधारित है. विशेषकर महिला पात्र ही उनके उपन्यासों का केंद्र होती है | पानी केरा बुदबुदा भी पाश्चात्य धरातल पर लिखा गया एक बहुआयामी उपन्यास है, जिसमे लेखिका ने पिया नामक महिला पात्र के माध्यम से कई समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखने का सफल प्रयास किया है. आलोच्य उपन्यास में लेखिका के लेखन-कार्य के कई रंगों का साक्षात्कार होता है | चाहे वह भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंतर हो या फिर कश्मीर प्रांत का वर्णन | एक ओर जहाँ पश्चिमी देशों में मानव पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर जीवन को व्यतीत करता है तो दूसरी ओर भारत में रहकर मनुष्य अनेक प्रकार की धार्मिक तथा सामजिक बाधाओं में झकड़ा हुआ अपनी कई इच्छाओं का दमन करने के लिए विवश होता है |

अमेरिका जाने के पश्चात पिया स्वयं को मुक्त एवं स्वतंत्र अनुभव करती ह, "यह समाज मुझे बहुत रास आता है| कोई किसी की ज़िन्दगी में दखल नहीं देता सब अपना अपना काम देखते हैं| अपने में रहना यही संभव है|"1 भारत में ऐसी कई समस्याएं हैं जो आधुनिक युग में भी एक अभिशाप बनकर सम्पूर्ण मानव जाति विशेषकर महिलाओं को अपनी चपेट में ले रही है| यहाँ महिलाओं को बोझ समझते हुए उनके प्रत्येक इच्छाओं का दमन किया जाता

है| कभी उनकी पढाई पर रोक लगा दी जाती है तो कभी उनकी इच्छा के विपरीत उनका विवाह कर दिया जाता है| "दामोदर से मैंने कभी प्यार नहीं किया| घरवालों ने शादी कर दी और तुम हिन्दुस्तानी लड़की की हालत तो जानते ही हो| परिवार की आग्रह के आगे चुप हो जाना पड़ता है|"2

आलोच्य उपन्यास में लेखिका ने एक प्रावासी भारती की मनःस्थिति तथा उसके दर्द का भी मार्मिक ढंग से चित्रण किया है| अपनी जन्मभूमि छोड़कर विदेश में हर प्रकार की सुविधा होते हुए भी अपने देश की याद उन्हें हर पल कचोटती रहती है| "कश्मीर से विस्थापित होकर दिल्ली में बसा पिया का परिवार अपने खोए हुए साम्राज्य के शोक और उदासियों में ही डुबा हुआ था|"3 यद्यपि इस उपन्यास में उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त कई अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है चाहे वह पुरुष-प्रधानता की समस्या हो या फिर भारतीय नेताओं पर कटाक्ष परन्तु इस उपन्यास को ध्यानपूर्वक पढने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि इन सब पक्षों को कहीं न कहीं अस्तित्वबोध में विस्तार करने के लिए प्रयोग में लाया गया है |

यह उपन्यास एक ऐसी नारी की व्यथा-कथा है जो अपने देश को छोडकर दूसरी जगह नहीं जाना चाहती परन्तु भारतीय रीति-रिवाजों के आगे आत्मसमर्पण कर उसे अपने पति के साथ अमेरिका जाना पड़ता है और यही से शुरू होता है संघर्ष ; अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने का संघर्ष किसी भी वस्तु को तब तक अस्तित्ववान नहीं माना जाता जब तक दूसरों को उसके होने का अनुभव न हो या फिर दूसरों से उसे स्वीकृति न मिले | उसके लिए व्यक्ति की पहले स्वयम अपने होने का आभास होना चाहिए | "हर किसी को

कन्फर्मेशन तो चाहिए होती है | कोई कितना भी सुंदर, बढ़िया या ख़ास हो, वह तब तक उतनी नज़र ए ख़ास नहीं हो पाता जब तक कि उसे ऐसा उसके ख़ास मित्र नहीं महसूस कराते, तभी व्यक्ति में अपने कुछ होने का विशवास जागेगा ना?|"4 अत: व्यक्ति की जन्मजात या प्राप्त उपलब्धियों के लिए अभिमूल्यन आवश्यक है |

नारी-अस्तित्व के लिए पुरुष-प्रधानता एक चुनौती का विषय बन गया है | पुरुषों को ही अतिआधिक महत्त्व देकर, जीवन की भागडोर उनके हाथ में देकर नारी अपने अस्तित्व को स्वयं नकारती है | कुछ ऐसी ही दशा आलोच्य उपन्यास की नायिका पिया की भी है जिसका विवाह यह कहकर जल्दी कर दिया जाता है कि उनके पिता का देहांत होने के कारण उसके लिए अच्छा वर मिलना कठिन हो गया है| "पिया झींकती इस बात पर यानि कि बाप का होना ही सब कुछ है| लड़की का व्यक्तित्व, उसकी लियाकत सब बेमायने.....|"5 विवाह के बाद भी यह भेदभाव उसके जीवन में व्हालता रहता है और उसके अस्तित्व पर लगातार प्रहार होता रहता है| यदि वह उसका विरोध करती तो उसे अनेक प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक यातनाएँ पहुँचाई जाती है| "पति उसे मोम की गुडिया की तरह अपने हाथों में डालना चाहता तो पिया का अंतर चीख उठता| यह वह नहीं चाहती| वह असहमति जताती| वह बर्दाशत न कर पाती| झगडा होता और झगडे का अंत होता पिया की पिटाई पर|"6

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज से कट कर जीवन-यापन नहीं कर सकता | उसके अस्तित्व-निर्माण में समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है अर्थात समाज मानव-जीवन का

एक ऐसा अंश है जिसके अभाव में मनुष्य जीने की कल्पना नहीं कर सकता और स्वयं को अर्थहीन अनुभव करता है | समाज के होने पर ही मनुष्य स्वयं को सुरक्षित रख सकता है | पिया निशांत से कहती है – "यू आर आउटरेजियस ! हमेशा बेसिरपैर की बात | समाज को झड़ से उखाड़ फेंकने की बात | समाज न होता तो तुम भी एग्जिस्ट न कर रहे होते | किसी ने शिकार कर लेना था तुम्हारा |"7

मनुष्य समाज को आवश्यक मानते हुए भी पलायन की ओर उन्मुख हो रहा है | वह अब सदैव अकेले रहने का प्रयास करता रहता है | वः अपने अस्तित्व को पहचानने के लिए अकेलेपन का सहारा लेता है | यद्यपि मनुष्य अकेले नहीं रह पाता फिर भी वह कभी-कभी दूसरों से अलग रहना पसंद करता है; जहाँ पर उसे अपने होने का बोध होता है| इसका कारन यही है कि वह दूसरों के शोषण तथा उनके द्वारा किये गए अत्याचार को सहन नहीं कर पाता| "यूँ तो पिया भी ज्यादा वक्त अकेले ही रहती है, उसे अच्छा ही लगता है अपना अकेला होना, अपने कर्मों पर अपना अधिकार होना, अपने फैसलों की छूट होना, अपने मन के मुताबिक अपना हर दिन व्यस्थित करना, अपनी मनमर्जी से अपना जीवन डालना|"8

अस्तित्व के लिए और एक विशेष बात यह है कि यह सर्वप्रथम स्वतंत्रता की माँग करता है| एक स्वतन्त्र मनुष्य ही अपने अस्तित्व कोसार्थक रूप दे सकता है और यही कारण है कि आज लोग अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने विवाह के बंधन को भी नहीं कतराते| उन्हें लगता है कि वैवाहिक जीवन में उनकी स्वतंत्रता समाप्त हो रही है| हमारे समाज में आज भी नारी को उसके

अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है| पिया कुछ ऐसे ही नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है;जो विवाह के पश्चात अपनी इच्छाओं पर अपना अधिकार खो देती है |उसे अपने हर कार्य के लिए अपने पति की अनुमति लेनी पड़ती है |यहाँ तक कि अपनी कमाई पर भी उसका कोई अधिकार नहीं रहता है |यही कारण था कि वह अपने पति को छोडकर अलग रहने का निर्णय लेती है |"वह हमेशा यही होना चाहती थी-अपने आप की स्वामिनी|इसी से उसने अपने शादी के बंधन को तोड़ा |पति को छोड़ |उस रिश्ते में उसे लगातार लगता था कि वह अपनी मालिक खुद नहीं |हर कदम पर कोई दखलअंदाजी करने वाला था |"9

लेखिका ने बड़े सजीव ढंग से नारी-मन में चल रहे अंतर्द्वन्द्द को दर्शाया है| यह अंतर्द्वन्द्द केवल अपने अस्तित्व को स्थापित करने की ललकवश उनके मन में प्रवेश करता है| पिया एक ओर अपने पति दामोदर से अलग होकर स्वतन्त्र रूप से जीना चाहती है तो वही दूसरी ओर कभी अनुराग तो कभी निशांत को उसी विवाह के लिए प्रतिबद्ध करना चाहती है, जिसे वह अपने अस्तित्व के लिए मात्र एक अड़चन मानती चली आ रही थी| "पिया को तो बहुत ख्वाहिश थी कि वह और अनुराग विवाह कर ले| शायद उसे अपने होने की पूरी सार्थकता मिल पाती|"10 हमारे जीवन में रिश्ते भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, रिश्तों में बंधे रहना मनुष्य के लिए एक सामजिक मजबूरी भी बन गयी है क्योंकि इसमें रहने से ही वह अपनी आवशकताओं को पूरा कर सकता है तथा उन्हें सुख-दुःख का साथी बनाकर संतुष्टि प्राप्त कर लेता है| "हम इंसानों की बहुत मूलभूत ज़रूरत है अहम् को सहलाए जाने की| तभी तो

हम रिश्तों में बंधते हैं| किसी को हम सहलाएं, कोई हमें| वरना हमारी ईमारत ढलने लगती है|"11

निष्कर्षतः यह कई पहलुओं को साथ लेकर चलने वाला एक बहुआयामी उपन्यास है, जिसमे सुषम बेदी की लेखन प्रतिभा का साक्षात्कार हो जाता है| इस उपन्यास की भाषा का निर्माण सरल ढंग से किया गया है और रोचकता बढानें के लिए उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया गया है| बेशर्म, बेमुरव्वत, बेहया, जंगे-मैदान जैसे शब्द इतने आकर्षित है कि पाठक को मंत्रमुग्ध कर लेते हैं| इसके अतरिक्त अंग्रेजी शब्दों की भी भरमार है| न केवल शब्द बल्कि पूरे के पूरे वाक्य देखने को मिलते हैं| जैसे पिया द्वारा निशांत को कहा गया यह वाक्य " डू आई हेव पॉवर ओवर यु|"12 इस प्रकार के अन्य कई वाक्य इस उपन्यास में देखने को मिलते हैं और ऐसा होना स्वभाविक है क्योंकि इस कृति का भूमिक्षेत्र पाश्चात्य धरातल है और उसके पात्र भी वही निवास कर रहे हैं|

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

१.सुषम बेदी, पानी केरा बुदबुदा,पृष्ठ.68

२.वही, पृष्ठ.34

३.वही, पृष्ठ.15

४.वही, पृष्ठ.6-7

५.वही, पृष्ठ.27

६.वही, पृष्ठ.29

७.वही, पृष्ठ.54

८.वही, पृष्ठ.57

९.वही, पृष्ठ.8

१०. वही, पृष्ठ.6

११. वही, पृष्ठ.135

१२. वही, पृष्ठ.5

सब्जार अहमद बट्टू
पीएच.डी.शोधार्थी
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर |

फोन.नं०: 9596193687